

कार्तिक देशमुखान्न विचारजगत् व्याख्या (bhūtacaitanya vada)

देहस्य धामन श्रीकृष्ण नय, तेषामि
देह तिन आत्माव अतिवृत् श्रीकृष्ण नय, देह तिन आत्मा
अतिवृत्ताव नय यत्न एव अतिवृत् श्रीकृष्ण नय याव नय,
अम्न हत पाव, तेषान्तर मात्माव अनुत्तर मात्माव याव -
एत अनुत्तरव आत्मावत्त आत्मा नामक द्रव्य अस्तीत्यव,
कथं विचारय?

कार्तिक यत्नन तेषान्तर अस्तीत्येव अनुत्तरव हय,
सूत्राः तेषान्तर अस्तीत्यव वीर, सिद्धि, जगत्, तेष ७ मत्त -
एत एवमि महापुरुषे विद्यमान यत्न आमादेव देह अस्ति
हयत्त एत एवमि तेषामान देहेव अनुत्तर अस्ति हत एत
कथं तेषान्तर तेषान्तर हय, किं विद्यमान एत एवमि
तेषामान एव अस्ति एत तेषान्तर देहे, किं एत विद्यमान
अस्ति यत्न तेषान्तर तेषान्तर हय, पावन, पून, धारय एत
पत्तान्तरव अस्ति एत नाम ३२ देहे, किं अनुत्तर अस्ति
विद्यमान अनुत्तर विद्यमान कथं चर्चन कथं नाम ३२ तेषान्तर
हय,

(तेषान्तर विद्यमान कथं आत्मा, अथान्तरव देहे
आत्मा कथं प्राव्य विद्यमान हय, तेषान्तर कथं, आत्मा
पञ्च' ईगादि यत्न आत्मा अथय कथं आत्मा, देहे
कथं या पञ्च हय याव, सुत्तय, आत्मा वरत याव
७ देह हय तिन किं हय नय, अम्न हत पाव आत्मा
देह' एत यत्न आत्मा अथय कथं, अथन यदि देह ७
आत्मा अस्ति हय तेषान्तर यत्न अर्थ की हय?

कार्तिकान्न यत्न, यत्न तिन या मत्त तिन आत्मा किं हय
नय, किं तेषान्तर यत्न अथय यत्न आत्मा अथय

ইহা স্বয়ং শাস্তি, যিহা স্বয়ংকম জালায় দেহ এই থাকে
জানি ও দেহ জাতি, ক

স্বাভাবিক চারুকর্মের মতে চেতন্য কহ
চেতন্যই বাত, দেহক প্রকৃ স্বয়ং চেতন্যক জন্ম, দেহই
যখন জালায়, তখন কহ বিদ্যাই হইল জালায় বিদ্যাই হইল,
চৈতন্যের দ্বারা সৃষ্টি দেহ চৈতন্যে বিদ্যাই হইল, সুতরাং সৃষ্টি
দেহ জালায় জন্ম পুনর্জন্ম হইল গায় না, ফলন্য দেহ স্মৃতি
হইত হইল জন্ম কিন্তুই অবস্থিত থাকে না, দেহান্তিবিহীন
হইল কিন্তুই লই, তাই জালায় পুনর্জন্ম প্রাপ্তিই অবস্থিত,
পুনর্জন্ম, পুনর্জন্মকিহা জাতিই ও উৎপত্তিই হইল, কল্পনামত,
জালায় প্রকৃ স্বয়ং চারুকর্মের এই মতবাদ 'দেহান্তিবিহীন'
চেতন্যবাদ) নামে পরিচিত।

চারুকর্ম মতে প্রাথমিক ও চেতন্য অর্থাৎ
জাতি কহ অবস্থিত জাতিই অর্থাৎ উৎপত্তি হইল, এই মতে
চেতন্য জন্ম মানব জাতিই জিহিই অনুভূতি জালায় কহ
কল্পন্য জন্মই পুনর্জন্ম কহ জাতিই জাতিই জাতিই কহ
প্রাথমিক লই, জিহি, জন্ম, তখন ও মন্য - কল্পন্য
কল্পন্য কহ চেতন্য জালায় জন্ম না, জালায়, পুনর্জন্ম, জিহিই
জিহিই হইল চেতন্য জালায় হইল।

প্রাথমিক ও উৎপত্তি মতবাদ
জালায় জাতিই জাতিই হইল, চেতন্য জালায় জিহিই
দেহই জিহিই জালায় জালায়, জালায় চেতন্য জালায়
জালায় দেহ জালায়, জালায় জালায়, জিহিই লই,
জালায় চেতন্য লই, প্রকৃ জালায় জালায় জালায়
জালায় জালায় জালায় হইল, দেহ ও চেতন্য মতী জালায়

চাৰুপুৰ সন্মত আছে, চাৰুপুৰত বহন, দুয়ো অঞ্চল,
 তেওঁ অনুমত আৰু আৰ্থিক ক্ষতি তেওঁৰ পৰা, তেওঁ
 আৰু বিজ্ঞান অঞ্চলৰ পীড়া হ'ল আৰ্থিক ক্ষতি,
 বিজ্ঞান কাম বা জাপ পায়, সুতৰা, তেওঁ যেন বিজ্ঞান
 হয় তেনে দুয়োমুখৰ তেওঁ চাৰুপুৰ হৈছে বিজ্ঞান হয়,
 তেওঁ মুঠ হয়, অত্যাধিক, তেওঁ আৰু।

চাৰুপুৰত বিজ্ঞান আৰু

এই যে তেওঁ ক'লে সীকাৰ ক'লে তেওঁ অৰ্থাতঃ
 ক'লে সীকাৰ ক'লে হয়, আৰু তেওঁ অৰ্থাতঃ ক'লে
 সীকাৰ ক'লে এক তেওঁ অত্যাধিক ক'লে সীকাৰ ক'লে
 হয়, তেওঁ ক'লে ক'লে সীকাৰ ক'লে - বিজ্ঞান ক'লে
 হ'ল আৰু সীকাৰ বিজ্ঞান হয় আৰু।

চাৰুপুৰত বিজ্ঞান আৰু এক

দুয়োমুখৰ আৰু হ'ল এই যে, চাৰুপুৰত সীকাৰ
 আৰু ক'লে পায় না, ক'লে পূৰ্বদিনে অনুমত বিজ্ঞান
 পৰ্য্যন্ত স্থান হ'লে পায় না, ক'লে পূৰ্বদিনে যে সীকাৰ
 দিন পৰ্য্যন্ত তেওঁ ক'লে, আৰু অন্য সীকাৰ, আৰু ক'লে
 সীকাৰ হ'লে আৰু না, হ'লে সীকাৰ ক'লে আৰু
 না - এটা অনুমত বিজ্ঞান, তেওঁ তেওঁ আৰু হ'লে আৰু
 আৰু যে অনুমত দিন হ'লে বা সীকাৰ তেওঁ অনুমত
 আৰু না, সুতৰা আৰু ক'লে অনুমত বিজ্ঞান হ'লে
 বা ক'লে সীকাৰ ক'লে পায় না, তেওঁ বিজ্ঞান অনুমত
 যে বিজ্ঞান স্থান সীকাৰ না, আৰু ক'লে তেওঁ অনুমত
 হ'লে, তেওঁ আৰু ক'লে অনুমত, সুতৰা সীকাৰ বা ক'লে
 সীকাৰ তেওঁ অনুমত ক'লে, সুতৰা তেওঁ বিজ্ঞান স্থান

ହେଉ ପାରୁ ନା, କିନ୍ତୁ ଭାଗ୍ୟ ସାଧାରଣତଃ ଅନୁକୂଳ ସିଦ୍ଧି
 -କ୍ଷେତ୍ରରେ ବା ବର୍ଦ୍ଧିତ ସ୍ୱାଧୀନ ହେଉ ପାରି, ଏ କାର୍ଯ୍ୟ
 ସାଧ୍ୟକାରୀ ମିତ୍ର-ମାତାଙ୍କ ଦେଖିବା ନାମ, ଏହି କାର୍ଯ୍ୟ
 ପଦ୍ମବତୀ ସଂକଳନରେ ଦେଖାଯାଏ - ଏହି କାର୍ଯ୍ୟରେ, କରୁଥିବା
 ମିତ୍ର, ସୁତରାଫ, କାର୍ଯ୍ୟ ଅର୍ଥାତ୍ ଭାଗ୍ୟ ଏ କାର୍ଯ୍ୟରେ ବାଧୀ
 ତାହା ହେଉ ନାହିଁ କାର୍ଯ୍ୟରେ ନିଶ୍ଚିତ ହେଉ ହେଉ ପାରୁ ନା,

ଏ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଚେତନା, ଚାହୁଁଛନ୍ତି ସମ୍ଭବ,

ପୂର୍ବ ଅନୁଭବକୁ ଯେଉଁ ସମ୍ଭବତଃ ସେଇ ସମ୍ଭବ, ଏହି ପୂର୍ବକ୍ରମ
 ଯେଉଁ କାର୍ଯ୍ୟରେ, କାର୍ଯ୍ୟ ପୂର୍ବକ୍ରମରେ ଦେଖି ଯେଉଁ କାର୍ଯ୍ୟରେ
 ଦେଖି ସଂକଳନ ହେଉ, ଏହି ଏହି ସମ୍ଭବତଃ ହେଉ ହେଉ
 ସ୍ୱାଧୀନ ହେଉ,

କାର୍ଯ୍ୟରେ ସିଦ୍ଧି ଭାଗ୍ୟ ବଳା ଯାଏ,

ଚେତନା ଯଦି ଦେଖି ସିଦ୍ଧି ହେଉ, ତେଣୁ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ହେଉ
 ସିଦ୍ଧି ସମ୍ଭବ ଚେତନା ସାଧୁ କେନ୍ଦ୍ରିତର ଅତ୍ୟନ୍ତ ସିଦ୍ଧି ହେଉ,
 କିନ୍ତୁ ଚେତନାରେ ସାଧୁ କେନ୍ଦ୍ରିତର ମର୍ଯ୍ୟାଦା ଅତ୍ୟନ୍ତ କ୍ଷମା ଯାଏ
 ନା, ତେଣୁ କାର୍ଯ୍ୟ ସିଦ୍ଧିରେ ଯେଉଁ ନିରତର ମାନସିକ ସିଦ୍ଧି
 ଏହି ଅନୁଭବ ହେଉ, କାର୍ଯ୍ୟ ମାନସିକ ସିଦ୍ଧି ଅତ୍ୟନ୍ତ ହେଉ ନା,
 ଏହି କାର୍ଯ୍ୟ ଚେତନା ଦେଖି ସିଦ୍ଧି ନା,

କାର୍ଯ୍ୟ ମତ ଅନୁଭବରେ ଏହି କାର୍ଯ୍ୟ ଦେଖାଯାଏ

ସମ୍ଭବ କ୍ଷମା ଯାଏ, କାର୍ଯ୍ୟ ମତ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଏକମାତ୍ର ସମ୍ଭବ,
 କିନ୍ତୁ କାର୍ଯ୍ୟ ହେଉ ସଂକଳନ ଚେତନାରେ ହେଉ ହେଉ
 କାର୍ଯ୍ୟ କେଉଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ କ୍ଷମା ନା, ଏତେକ, ଦେଖାଯାଏ
 କାର୍ଯ୍ୟ ସିଦ୍ଧି କାର୍ଯ୍ୟ ମହତ୍ତ୍ୱ ସୁକ୍ଷ୍ମରେ ନା, ତେଣୁ
 ଏକମାତ୍ର ସମ୍ଭବ ଯାଏ, କାର୍ଯ୍ୟ ଦେଖାଯାଏ ଏକମାତ୍ର ସମ୍ଭବ
 କାର୍ଯ୍ୟରେ, କାର୍ଯ୍ୟରେ କାର୍ଯ୍ୟରେ କାର୍ଯ୍ୟରେ, କାର୍ଯ୍ୟରେ,

যেহেতু মনুষ্য ক্রমেণ দ্বিত্য এবং অল্পম্ লক্ষ্যে
দ্বিত্য আক্ষম্ হয়।

✓ V.V.I.

||

৫৫